चीनी नववर्ष २०१८ :

श्वान का वर्ष

चीनी राशि चक्र, बारह वर्षीय चक्र पर आधारित है, जिसमें हर एक वर्ष एक अलग पशु से जुड़ा है।

जिनका जन्म जिस विशिष्ट वर्ष में होता है, कहा जाता है कि उस व्यक्ति में उस पशु के गुण होते हैं। इस वर्ष चीनी नववर्ष का आरम्भ १६ फ़रवरी, २०१८ को है, जो कि श्वान का वर्ष है।

श्वान के प्रमुख गुण हैं, अहैतुक प्रेम व स्वामिभक्ति। श्वान-वर्ष में जन्में व्यक्तियों में उत्तरदायित्त्व की दृढ़ भावना के साथ स्पष्टवादिता व ईमानदारी का गुण होता है।

युधिष्ठिर का वफ़ादार साथी

महाभारत की एक कथा पर आधारित

हिमालय पर्वत की ऊँचाइयों पर, एक मनुष्य और एक श्वान सीधी चढ़ाई वाले मार्ग पर जा रहे थे। वह व्यक्ति वृद्ध था, दृढ़ता से किन्तु धीरे-धीरे चल रहा था। श्वान फुर्तीला था। वह ऐसे रास्तों से भी निकल जाता था जो मनुष्य के लिए अति संकरे होते या बहुत ऊँची चट्टानों के ऊपर से भी कूद जाता। फिर, धैर्य और सतर्कता के साथ उस मनुष्य की प्रतीक्षा करता।

इतने ऊँचे, निर्जन, सुन्दर स्थान में ये दोनों क्या कर रहे थे? मैं आपको एक 'अद्‌भुत' कहानी सुनाती हूँ।

उस मनुष्य का नाम युधिष्ठिर था। कुछ ही माह पूर्व, वे एक विशाल साम्राज्य पर शासन कर रहे थे — वह राज्य जिसे पहले, वे और उनके भाई, पाण्डव अपने चचेरे भाइयों के छल-कपट के कारण खो चुके थे। भगवान श्रीकृष्ण की अपरिमित सहायता व कृपा से पाण्डवों ने फिर से अपना राज्य प्राप्त कर लिया था; उन्होंने धर्म व पराक्रम के साथ एक बड़ा युद्ध लड़ा था और उनकी विजय, अधर्म पर धर्म की विजय थी।

युद्ध के बाद कई वर्षों तक युधिष्ठिर ने अपने चार छोटे भाइयों व पत्नी द्रौपदी की सहायता से बुद्धिमानी से व न्यायपूर्वक राज्य किया। द्रौपदी स्वयं भी धर्म के एक स्तम्भ के समान थी और अनेक बार उसने

अपनी तीव्र वीरता प्रदर्शित की थी। युधिष्ठिर अपनी प्रजा से बहुत प्यार करते थे परन्तु वृद्ध होने पर, उनके मन में अपने जीवन के अन्तिम वर्षों को पूरी तरह से आध्यात्मिक अभ्यासों में लगा देने की एक गहरी व सच्ची ललक उत्पन्न हुई। उन्होंने मेरू पर्वत की तीर्थयात्रा करने का निर्णय किया। मेरू एक पौराणिक पर्वत है जिसके शिखर से इन्द्रदेव के दिव्यलोक-स्वर्गलोक को जाया जा सकता है।

द्रौपदी व अन्य पाण्डवों में भी युधिष्ठिर की तरह ललक थी। वे इस बात पर सहमत हो गए कि वे सभी साथ में इस तीर्थयात्रा पर जाएँगे। "इससे अच्छा क्या होगा कि हम अपना शेष जीवन साथ में पृथ्वी से स्वर्गलोक की यात्रा करने में बिताएँ!" द्रौपदी ने कहा।

अतः, युधिष्ठिर ने अपने भाई अर्जुन के पौत्र को अपने उत्तराधिकारी के रूप में सम्राट बनाने की तैयारी की। अगले ही दिन पाण्डवों ने अपनी सभी राजकीय शक्तियों, विशेषाधिकार और धन-सम्पत्ति का त्याग किया और एक साधारण तीर्थयात्री का वेष धारण कर अपनी अन्तिम यात्रा पर निकल पड़े।

मार्ग में, नगर-द्वार पर ही एक रोचक घटना घटी। पता नहीं कहाँ से एक श्वान वहाँ आ गया। वह शरीर से बड़ा व भूरे रंग का था और उनके साथ जाने के लिए तैयार प्रतीत होता था। वह द्वार के बाहर तक उनके पीछे आया और युधिष्ठिर के पीछे-पीछे थोड़ी दूरी रखकर चलने लगा।

"हे प्रिय श्वान, तुम जहाँ से आए हो वहीं वापस चले जाओ," युधिष्ठिर ने कहा। "यह बड़ी विकट यात्रा है।" किन्तु श्वान ने युधिष्ठिर पर एक सहज दृष्टि डाली, अपनी पूँछ को कुछ बार हिलाया और दृढ़तापूर्वक अपनी नाक को आगे की ओर करके, पथरीले मार्ग पर एक के बाद एक अपने पंजे उठाकर चलता रहा। यह स्पष्ट था कि श्वान ने अपने लिए नए स्वामी को चुन लिया था और उसका, युधिष्ठिर को या उनके परिवार को छोड़ने का कोई इरादा नहीं था। युधिष्ठिर समझ नहीं सके कि श्वान को किस तरह मनाया जाए इसलिए उन्होंने उसे अपने साथ आने के लिए मौन सहमति दे दी।

जब पाण्डव विस्तृत व सूखे मैदानों और हरे-भरे घने जंगलों से गुजरते, श्वान भी निरन्तर उनके साथ ही चलता रहा। जब वे तलहटी से हिमशिखरों पर चढ़े, वह उनके साथ ही था। वह हर ऊबड़-खाबड़ रास्तों पर चढ़ते समय भी उनके पीछे ही था और हर नीली छायादार घाटी में नीचे उतरते समय भी साथ था। तपती धूप में व बर्फीली आँधियों में, कठोर दिनों व भयावह रातों में भी वह निर्भीक चलता रहा।

यात्रा अनवरत चलती रही, चलती रही, चलती रही। एक के बाद एक, परिवार के सदस्य, कठोर व निर्मम परिस्थितियों, भोजन के अभाव, निद्रा की कमी और भीषण थकान के कारण मृत्यु को प्राप्त हो

गए। हर एक के गुजरते जाने से, दूसरों के लिए आगे बढ़ते रहना और भी कठिन हो रहा था। जो जीवित थे, उन्हें युधिष्ठिर हर बार सांत्वना देकर याद दिलाते थे कि आत्मा मृत्यु से परे है। फिर एक दिन, उनका अंतिम भाई भीम जो सबसे बलिष्ठ था, वह भी नहीं जागा। युधिष्ठिर के धैर्य का बाँध टूट गया। वे विलाप करने लगे। उन्हें अब धैर्यवान बने रहने की कोई आवश्यकता न थी; कोई बचा ही नहीं जिसे वे सांत्वना देते।

जब श्वान ने अपने स्वामी को इस अवस्था में देखा तो उन्हें आराम पहुँचाने के लिए उनके निकट गया। युधिष्ठिर ने कृतज्ञतापूर्वक उसे अपने हाथों में थाम लिया और श्वान ने भी अपना सिर युधिष्ठिर के सीने पर रख दिया। युधिष्ठिर के स्नेहपूर्ण अश्रु गालों से बहकर श्वान के राजसी माथे पर टपक रहे थे। वे दोनों मूक व्यथा में डूबे हुए थे।

कुछ समय पश्चात्, युधिष्ठिर अपने दुःख से बाहर निकले; कड़ाके की ठंड थी और उन्होंने महसूस किया कि यदि वे चलना जारी नहीं रखेंगे तो स्वर्गलोक पहुँचने से पहले ही दोनों की मृत्यु हो जाएगी। युधिष्ठिर ने श्वान की करुणामय आँखों में देखा और कहा, "मेरे अच्छे मित्र, अब हमें उठकर पुनः अपनी यात्रा आरम्भ कर देनी चाहिए।"

आने वाले दिनों में, युधिष्ठिर ने देखा कि उनके बजाय अब श्वान ही आगे का मार्ग दिखा रहा है।

श्वान आगे दौड़ कर जाता और जब युधिष्ठिर पीछे रह जाते तो पीछे देखता मानो कह रहा हो, *क्या आप नहीं आ रहे हैं? आप चल सकते हैं, हे युधिष्ठिर! आप चल सकते हैं!*

इस तरह वे महान व्यक्ति और उनका प्रिय नया मित्र श्वान, उस ख़तरनाक मार्ग पर आ पहुँचे थे जो घूमते हुए मेरू पर्वत के शिखर की ओर जाता था। अब वे लहराते बादलों से ऊपर थे जहाँ सूर्य की कोमल रोशनी में बर्फ, हीरों की तरह चमक रही थी। आख़िरकार, वे शिखर पर पहुँच ही गए। यह कहना स्वाभाविक था कि युधिष्ठिर बड़े प्रफुल्लित हुए। उन्होंने श्वान की ओर देखा जो अपनी पूँछ को मानो किसी दैवीय गीत की ताल पर लयबद्ध तरीके से हिला रहा था। ऐसा प्रतीत हो रहा था कि श्वान युधिष्ठिर पर मुस्करा रहा है। ऐसा लग रहा था जैसे कि यह सुरूप श्वान जानता था कि एक तीर्थयात्री के रूप में, उसने और युधिष्ठिर ने समान पुण्य संचित किया है।

उसी समय युधिष्ठिर को लगा कि कोई वस्तु उनकी ओर बढ़ती चली आ रही है। यह मन्द प्रकाश के एक गोले जैसा था और बड़ी दूर से आता हुआ लग रहा था। *यह क्या हो सकता है?* तेज नज़रों से, वे ग़ौर से देखने का प्रयत्न करने लगे। वह प्रकाश निरन्तर उनकी ओर चला आ रहा था तथा वह बड़ा,

और बड़ा, और बड़ा होता जा रहा था। और अचानक ही युधिष्ठिर की सम्पूर्ण दृष्टि एक श्वेत प्रकाश से भर गई।

तेज से बचने के लिए उन्होंने अपना एक हाथ अपने चेहरे पर और दूसरा श्वान के सामने रख दिया।

युधिष्ठिर ने अपने हाथ के पीछे से झाँका और देखा कि प्रकाश के उस बादल से एक आकृति उभर रही है। उन्होंने एक घोड़ा, पहिए और अन्त में जगमगाती हुई मणियों से जड़ित, एक विशाल श्वेत रथ देखा। रथ में शुभ्र-निर्मल वस्त्रों से सुसज्जित एक दिव्यपुरुष विराजमान थे। बिना कोई आवाज़ किए वह रथ वहाँ आकर रुक गया। वे दिव्यपुरुष रथ से उतरे और मोहक स्वर में बोले, "युधिष्ठिर!"

युधिष्ठिर को अपनी आँखों व कानों पर विश्वास ही नहीं हुआ। अपने हाथों को जोड़कर वे बोले : "भगवान इन्द्र!"

"हाँ, मैं ही हूँ," भगवान इन्द्र ने उदार व कृपामयी मुस्कुराहट के साथ कहा। "मैं स्वर्गलोक में तुम्हारा स्वागत करने आया हूँ।"

"मेरे प्रभु!" युधिष्ठिर ने विनयपूर्वक कहा। उनका चेहरा आनन्द से दमकने लगा। वे सोचने लगे, *कैसा शोभायमान। भव्य स्वागत है! यह कितने सम्मान की बात है, सभी कल्पनाओं के परे, कि अपनी यात्रा के अन्तिम चरण में मुझे स्वर्गलोक तक ले जाने के लिए स्वयं भगवान इन्द्र पधारे हैं!* उन्हें अपने परिवारजनों की याद हो आई जो यहाँ तक नहीं आ सके थे और उन्होंने कल्पना की कि उन सबको भी वही सम्मान मिल रहा है तथा सभी एक साथ रथ में भगवान इन्द्र के साथ स्वर्गलोक जा रहे हैं।

"आओ," भगवान इन्द्र ने अपना हाथ युधिष्ठिर की ओर आगे बढ़ाकर कहा। "ऊपर आ जाओ।"

युधिष्ठिर अपनी कल्पना से बाहर आए। उन्होंने नम्रतापूर्वक कहा, "धन्यवाद मेरे प्रभु। मैं चलूँगा। और मेरा वफ़ादार श्वान भी साथ में आएगा।"

"तुम्हारा श्वान?" भगवान इन्द्र ने आश्चर्य से कहा। वे हँसे और बोले, "नहीं, तुम्हारा श्वान नहीं आ सकता। केवल तुम ही हो जिसने धर्म को बचाए रखने के लिए एक लम्बा युद्ध लड़ा और उसके बाद इतने पुण्य संचित किए हैं।"

युधिष्ठिर निराश हो गए। नम्र स्वर में वे बोले, "आपकी उदारता के लिए धन्यवाद प्रभु! किन्तु मैं इस श्वान के बिना आपके साथ स्वर्गलोक नहीं आ सकता।"

“युधिष्ठिर,” भगवान इन्द्र ने कठोरता से कहा, “स्वर्गलोक के क्षेत्र में प्रवेश करने के लिए, व्यक्ति को मृत्यु के द्वार से होकर गुजरना पड़ता है। तुम विरले लोगों में से हो क्योंकि तुमने धर्मयुक्त जीवन जिया है, जिससे तुम सशरीर स्वर्ग में प्रवेश कर सकते हो। क्या तुम यह कहना चाहते हो कि तुम एक श्वान के लिए अपने जीवनभर के इस पुण्य को छोड़ दोगे?”

“हाँ, मेरे प्रभु, मैं अपने इस प्रिय मित्र के लिए स्वर्गलोक को छोड़ दूँगा। इसने मुझे अपने स्वामी के रूप में स्वीकार किया है और मेरे साथ इसने भी इस तीर्थयात्रा की समस्त भयंकर कठिनाइयों को सहन किया है। जब कोई भी मेरे साथ नहीं था तब इसने मुझे अपना साथ, सम्बल व प्रोत्साहन दिया है। मैं इस श्वान से प्यार करता हूँ और इसका समादर करता हूँ और अब मैं इसे छोड़ नहीं सकता। वास्तव में, मैं मानता हूँ कि यही मुझे आप तक लेकर आया है। आपके साथ जाने का वास्तविक पात्र तो *यही* है, मैं नहीं।”

“अच्छा तो तुम स्वर्ग जाने की अपनी इच्छा पूर्ण करने से भी अधिक इस श्वान से प्यार करते हो?” भगवान इन्द्र ने सन्देहपूर्ण स्वर में पूछा।

युधिष्ठिर ने आदरपूर्वक भगवान इन्द्र को प्रणाम किया और दृढ़ व नम्र स्वर में कहा, “हाँ, मेरे प्रभु। क्योंकि इस श्वान के कारण ही मैं अब तक जीवित हूँ। मुझे जो भी वैभव मिलेगा मैं अवश्य ही उसे इसके साथ बाँटूगा।”

फिर युधिष्ठिर अपने श्वान के सिर पर हाथ फेरने गए। जैसे ही वे अपना हाथ नीचे ले गए, उन्हें कुछ अपरिचित-सा स्पर्श हुआ; यह श्वान के रोयें जैसा महसूस नहीं हुआ। उन्होंने नीचे देखा और यह देखकर आश्चर्यचकित रह गए कि उनका हाथ एक चमचमाती गदा पर रखा था। युधिष्ठिर की आँखें चौड़ी हो गईं। उन्होंने अपनी दृष्टि धीरे से ऊपर की ओर उठाई। वहाँ, अपने प्रिय श्वान के स्थान पर, गदा धारण किए उनके पिता धर्मराज खड़े थे।

“आप, मेरे प्रभु?” युधिष्ठिर ने आश्चर्यपूर्वक कहा। “श्वान आप थे?”

“हाँ, मेरे प्रिय पुत्र,” धर्मराज ने कहा। उनकी आँखें गर्व से चमक रही थीं। “युधिष्ठिर, तुम धर्म के साक्षात् मूर्तरूप हो। अपने सम्पूर्ण जीवन में, तुमने हर कदम पर, हर परिस्थिति में, और हर चुनौती का सामना करने में धर्म का पालन किया है। इस पृथ्वी पर तुम्हारी इस अन्तिम यात्रा में मैं एक श्वान के रूप में तुम्हारे साथ आया और तुमने मेरे साथ एक स्वर्णिम हृदय से व्यवहार किया। मेरे पुत्र, जाओ, इन्द्रदेवता के साथ रथ पर सवार हो जाओ।”

“युधिष्ठिर का वफ़ादार साथी” यह कहानी, महर्षि वेदव्यास द्वारा रचित महाकाव्य, महाभारत में वर्णित कथा पर आधारित है। इस ग्रन्थ में, विवादग्रस्त राज्य को लेकर कौरवों व पाण्डवों के बीच हुए लम्बे संघर्ष का वर्णन है। इस महाकाव्य में, धर्म का सिद्धान्त और उसके विविध प्रयोगों का अन्वेषण किया गया है।

मार्गरिट सिम्पसन द्वारा पुनःकथित
मोर्ट जर्बर्ग द्वारा चित्रित
डिज़ाइन : हायमे कास्तनेदा

© २०१८ एस.वाय.डी.ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।